यसरिब का मुसाफ़िर कर्बला की ज़मीन पर

आयतुल्लाह सै० काज़िम नक़वी साहब क़िब्ला

इरादों में मज़बूती, मक़सद और उसूल की बुलन्दी के लेहाज़ से पैदा होती है। मक़सद जितने बुलन्द होंगे इन्सान का क़दम उनके हासिल करने में उतनी ही तेज़ी से आगे बढ़ेगा मुस्तक़बिल की रौशनी, आने वाले ज़माने का चमकता हुआ उम्मीद भरा आफ़ताब माज़ी और हाल के अन्धेरों को उसी तरह छाँट देता है जैसे शब के अंधेरे के बाद सुबह की सफ़ेदी का चमकता हुआ उजाला, मुसीबतों और परेशानियों के बादल हमेशा उन ही सरों पर मण्डलाते रहे हैं जिनमें मक़सद हासिल करने और मन्ज़िल तक पहुँचने की धुन समा चुकी थी——— यक़ीनन मुसीबतों की चमकती हुई बिजलियों ने, रंज और ग़म की बरसती हुई काली घटाओं ने, मंज़िल तलाश करने वालों और सुराग़ लगाने वालों को ज़रूर-ज़रूर हिला दिया होगा——— मगर। मज़बूत और पुख़्ता दिल के हौसलों को कभी दहलाया नहीं जा सका और न हैबत और डर का सिक्का जमाया जा सका, क़दम लड़खड़ा सकते हैं, बदन काँप सकता है, हाथ थर्रा सकते हैं मगर बलन्द मक़सद वाला दिल हरगिज़ नहीं घबरा सकता।

तकलीफ़ों, परेशानियों और ग़मों के पहाड़ ऐसे इन्सान पर गिरते हैं, उसे कुचलते हैं, यक़ीनन वह कुचल जाता है। जिस्म सुरमा और बदन रेज़ा-रेज़ा हो जाता है लेकिन यही मुसीबतें उसे दबा-दबा कर उसके अज़्म और इरादे में वो लचक पैदा कर देती है कि दब-दब कर उभरना और कुचल-कुचल कर उठना उसकी ख़ुददारी का तक़ाज़ा और इन्सानी शराफ़त का मक़सद बन जाता है यहाँ तक कि ज़ुल्म और सितम और ज़ोर ज़बरदस्ती की हदें मिल जाती हैं मगर मज़लूमियत, सब्र और बर्दाश्त की ताक़त की सरहद का निशान तक नहीं मिलता।

बलन्द मक़सदों की तलाश ही इन्सान को सैलाबों के मुक़ाबले और हादसों और इन्क़ेलाबों के तूफ़ानों से लड़ने पर तैयार करती हैं कमज़ोर बुनियाद वाले इन्सान में कहाँ भला इतनी ठहरने की ताक़त थी कि वह समुद्रों को उसी सीने से चीरता हुआ और पहाड़ों का उसी दिल और जिगर से मुक़ाबला करता हुआ आगे बढ़ता रहता? लेकिन इरादे की मज़बूती और अज़्म का इस्तेहकाम वह था जिसने ज़र्रे को आफ़ताब से और संग रेज़े को आसमान छूते पहाड़ से टकरा दिया।

हुसैन[अ०] वह हुसैन[अ०] जिनके मक़सद के चमकते हुए तार ख़ुदा की मर्ज़ी के ख़ज़ाने से जुड़े हुए थे जिनकी नज़र एक और सिर्फ़ एक ख़ुदा की मर्ज़ियों पर जमी हुई थी जो अपने मक़सद के लिये नहीं ख़ुदाई मक़सद को ज़िन्दा करने के लिए कमर कसे हुए तैयार हुए थे जो दिल में यह जज़्बा लेकर उठे थे कि तो सही, बन्दा वही बन्दा जो दुनिया को भूले हुए ख़ुदा की याद फिर दिला दे। बताओ जो इन बलन्द मक़सदों को लेकर उठा हो क्या उसके सीने में हिमालय ऐसा दिल न होगा जो इन बलन्द मक़सदों का उठाने वाला और उसका अज़्म और इरादा ऊँचे पहाड़ों से बातें न कर रहा होगा उसकी पीठ पर ताक़तवर ख़ुदा की क़ुदरत का हाथ न होगा। यक़ीनन हुसैन[अ०] के सामने अगर अपने मक़सद के सिलसिले में मुसीबतों का सैलाब था तो उनके पहलू में पहाड़ ऐसा बलन्द और मज़बूत दिल भी था।

वह तमाम ज़ुल्मों तमाम मुसीबतों को सिर्फ़ एक ढाल पर रोक रहे थे और वह था "हक़ की मदद का जज़्बा" हक़ की आवाज़ पर लब्बैक वह थी जिसने दुनिया के दिलों को दहलाया और आज भी दहला रही है। इस्लाम

की "हल मिन नासिरिन यन्सुरना" "है कोई जो मेरी मदद करे" की सदा हुसैन[अ०] ऐसे दिल और दिमाग़ रखने वाले के लिये बड़ी जिगर चीरने वाली और तकलीफ़ देने वाली थी। उन्होंने तै कर लिया कि मेरी ज़िन्दगी का सिर्फ़ एक ही मक़सद है और वह हक़ की मदद। अच्छा चाहे मुझे वतन छोड़ना पड़े लेकिन इस्लाम को बेघर न होने दूँगा। नाना की क़ब्र, माँ की क़ब्र भाई का मज़ार सबके चिराग़ मेरे न होने से बुझते हैं तो बुझ जाएं मगर हरम की शमा को ख़ामोश न होने दूँगा..... ख़ुदा की क़सम हुसैन[अ०] ने जो कहा वह करके दिखा दिया।

मक्के में जाकर पनाह लेना और वहाँ पनाह न मिलना, ज़िन्दगी के आख़िरी हज की तमन्ना और हज न कर सकना उमरे में बदल कर मक्के को छोड़ देना। यह वह मुसीबतें थीं जो हुसैन[अ०] ने हंसी ख़ुशी बर्दाश्त कीं— किस बुनियाद पर? सिर्फ़ अपने बलन्द मक़सद की मदद और सहारे पर।

रसूल[स०] का नवासा मदीने से हिजरत कर चुका हुसैन[अ०] रास्ता तै कर रहे हैं मक़सद तक पहुँचने के लिए। दुनिया मुसीबतें झेलती है, तकलीफ़ें उठाती है ज़िन्दा रहने के लिये मगर हुसैन[अ०] मुसीबतें बर्दाश्त कर रहे हैं मर जाने के लिये लोग मन्ज़िलें तै करते हैं सफ़र की परेशानियाँ बर्दाश्त करते हैं ज़िन्दगी क़ायम रखने के लिये और हुसैन[अ०] सफ़र कर रहे हैं ज़िन्दगी के क़ाफ़ले को मौत की मन्ज़िल तक पहुँचाने के लिये।

लीजिये हुसैन का सफ़र पूरा हुआ— मुसाफ़िर मन्ज़िल तक पहुँच गया— मक़सद की जुदाई में परेशान नुक्ता मक़सद पर आ गया— ख़ुद नहीं किसी का लाया हुआ। यसरिब (मदीने) से चला हुआ मुसाफ़िर, मदीने को छोड़कर मक्के को छोड़कर तेज़ी से क़दम बढ़ाता हुआ वहाँ पहुँचा जहाँ अज़ल से वादा हो चुका था। आज मुहम्मद[स०] का नवासा अज़ल की दुनिया से इन्तिज़ार करते-करते अपने उसी वादे की जगह पर आ ही गया। हुसैन[अ०] को ख़ुशी होगी, दिल ख़ुश होगा कि अलहम्दुलिल्लाह इस मन्ज़िल पर सफ़र का क़ाफ़ला ठोकरें खाते-खाते पहुँच गया, जिसका मुझ ही को नहीं मेरे नाना मुहम्मदे मुस्तफ़ा[स०] और बाबा अली-ए-मुर्तज़ा[अ०] को मुझ से पहले इन्ज़िार रह चुका था।

कर्बला का फ़ातेह कर्बला की ज़मीन पर उतरा। कहा जाता है कि इमाम का वफ़ादार घोड़ा चलते-चलते अचानक रुक गया इमाम[अ०] को ध्यान आया साथियों से मुख़ातिब हुए पूछा कि इस जगह का क्या नाम है। किसी कहने वाले ने कह दिया कि इस ज़मीन को कर्बला भी कहते हैं। हुसैन[अ०] के लिये यह आवाज़ कोई अन्जानी आवाज़ नहीं थी।

वह बचपने से कर्बला का नाम सुनते रहे थे, माँ की गोद, बाप की गोद, और नाना की गोद में रह कर भी इन्तिज़ार उसी गोद का था, जहाँ हुसैन[अ०] अपने को पा रहे थे।

कर्बला की ज़मीन पर क़दम रखते ही इमाम हुसैन[अ०] ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम यही वह ज़मीन है जहाँ हमारे ख़ून बहाये जायेंगे, जहाँ हमारी इज़्ज़त और हुरमत को बर्बाद और तबाह किया जायेगा। गोया इमाम इन अल्फ़ाज़ से अपने अस्हाब, मददगार और अन्सार के दिलों की गहराईयों का अन्दाज़ा करना चाहते थे क्या कहना उन वफ़ादार साबित क़दम और जिगर वाले साथियों का, हुसैन[अ०] के यह अल्फ़ाज़ उनके इरादों के लिए मददगार और सहारा साबित हुए। याद रहे कि मुसीबतें आ जाने के बाद भंवर में फंस जाने के बाद सैलाब की ज़द पर आ चुकने के बाद शेर के पंजे में गिरफ़्तार हो जाने के बाद जान गंवाना और उफ़ न करना और है लेकिन पहले से हलाकत के यक़ीन के बाद मौत का मुँह देख लेने के बाद मौत के ख़याल की तस्दीक़ इमाम की ज़बानी हो चुकने के बाद, फ़ना की गोद में हंसते खेलते और मुस्कुराते जाना हुसैन[अ०] के साथियों का न भुलाया जाने वाला कारनामा है।

मौत की बिजली चमके और आँखें न झपकें, लड़ती रहें, फ़ना के बादल गरजें, बदन न काँपे मज़बूती और बढ़ती जाए, मुसीबतों का सैलाब बढ़े कश्ती न डूबे और उभरती जाए। यह मन्ज़र और कहाँ है जो कर्बला के दामन में हुसैनी साथियों की रौशन सीरतों में है।

अच्छा हुसैन[अ०] उतरे ख़ेमे लगाने का हुक्म दिया।

वह अरब की धूप, वह सूरज की गर्मी, वह गर्मी की

सख़्ती, वह जलती हुई ज़मीन, वह तपता हुआ जंगल, और हुसैन[अ०] के ख़ेमों का फ़ुरात के कनारे से हट कर कर्बला की गर्म रेती पर लगाया जाना।

हुसैन[अ०] के साथ बच्चों और ठण्डे ख़ून वाले बूढ़ों के अलावा गर्मजोश, हौसले और हिम्मत वाले जवान भी थे, लेकिन यह कहना कि हुसैन[अ०] के साथियों की इताअत में कोई ऐसी ज़बान न थी जो इमाम[अ०] के हुक्म से ज़रा भी हटती हुई नज़र आती, ख़ैर ये भी वक़्त आया और गुज़र गया।

ज़माना तेज़ी से गुज़र रहा है लेकिन हुसैन[अ०] हर गुज़रते हुए लम्हे को अपनी मासूमियत का गवाह बना बनाकर रुख़सत कर रहे हैं। सुल्ह की बातचीत जारी हैं हर मुमकिन कोशिश अम्न और सलामती की की जा रही हैं। होगा वही जिसकी ख़बर हुसैन[अ०] पहले दे चुके हैं। मगर फ़रेब और सियासत के जालों का हर-हर तार हीला साज़ी और बहाने बनाने का हर-हर मौक़ा क्यों न ख़त्म कर दिया जाए, ज़ालिम के ज़ुल्म और मज़लूम की मज़लूमियत की सुर्ख़ी क्यों न इतनी साफ़ हो जाए कि आसमान पर सुर्ख़ी बन के ज़ाहिर हो। इमाम हुसैन[अ०] चाहते थे कि मैं हक़ को बातिल और बातिल हो हक़ से इस तरह अलग कर दूँ कि हर बातिल और दिल के अन्धे और मुतास्सिब को भी कुछ बोलने की गुन्जाइश बाक़ी न रहे।

लेकिन इधर इमाम हुसैन[अ०] की वह सुल्ह वाली कोशिश और दुश्मन पर दलील पूरी करने की आख़िरी मन्ज़िलें और उधर ताक़त और कुव्वत पर घमण्ड, ज़ुल्म और सितम, ज़बरदस्ती और शिद्दत पर ग़ुरूर, माल दौलत, फौज और लश्कर पर नाज़, अपनी जीत का यक़ीन, यह वह चीज़ें थीं कि इमाम हुसैन[अ०] सुल्ह और सुकून और अम्न क़ायम करने की पेशकश और दरख़्वास्तें करते रहे और उसके जवाब में इन्कार पर इन्कार तरदीद पर तरदीद होती रही।

ज़ालिम को क्या मालूम था कि मेरे ज़ुल्म और सख़्ती की पूँजी से कहीं ज़्यादा सामने वाले की मज़लूमियत का सहारा है, वह ज़ाहिर देखने वाली निगाहें क्या जानें कि हुसैन[अ०] के दिल में इरादे की कितनी गहराईयाँ हैं उनके जमने और डटे रहने की क्या मन्ज़िल है। वह तो ज़ुल्म से हक़ को दबाना चाहता है। हुसैन[अ०] मज़लूमियत से हक़ को उभारना चाहते थे।

सातवीं मुहर्रम आई और छोटे-छोटे बच्चों पर पानी भी बन्द कर दिया गया। प्यास-प्यास के जिगर काटने वाली आवाज़ें बुलन्द हुईं, लेकिन क़ुर्बान हों हमारी जानें उन बच्चों से लेकर उन बूढ़ों और फिर पर्देदार औरतों पर जिनके अज़्म और इरादे में फ़र्क कैसा, बल्कि मज़बूती और साबित क़दमी बढ़ती गई। ज़माने के लम्हे गुज़रते-गुज़रते और इन्तिज़ार की घड़ियाँ कटते हुए आशूर की रात अपने ख़ौफ़नाक और मुसीबतनाक पैकर में परेशानी व बेचैनी की दुनिया अपने साथ लेकर आई। यूँ तो बहुत सी रातें आईं और गुज़र गईं मगर कर्बला की ज़मीन पर आशूर की शब जिन ख़ुसूसियात को अपने दामन में लेकर आई वह न इससे पहले नज़र आती हैं और न उसके बाद— दुनिया में मौक़े हासिल किये गये होंगे, मोहलतें ली गईं होंगी लेकिन फ़ौजों को बढ़ाने के लिये, लश्करों में इज़ाफ़े के वास्ते, तलवारों पर धार और नेज़ों को तेज़ करने की ग़रज़ से। मगर कर्बला की यह अनोखी रात की मोहलत जो इमाम हुसैन[अ०] ने अपने भाई अब्बास[अ०] को भेजकर कुछ अजीबो ग़रीब मक़सदों की बुनियाद पर हासिल की गई थी वह तकबीरों की बलन्द होती हुई सदाएं, वह क़ुरआन की तिलावत की बढ़ती हुई आवाज़ें, वह मेहराबे इबादत में शम्शीरे आबदार की ख़मीदगी के मन्ज़र, वह रुकूउ और सजदे और नमाज़ों में पेच व ख़म के साथ जेहाद के वलवलों और हौसलों में इज़ाफ़े, वफ़ादारी, अहद को पूरा करना, अपनी बात पर आख़िर दम तक डटे रहने का यक़ीन दिलाना, हक़ की मदद के लिए वह आपस में एक-दूसरे से क़समें खाना, यही बातें, यही चर्चे, यही इबादतें, यह तिलावतें हर तरफ़ हर गोशे में, जैसे यह एक तरफ़ अल्लाह की तस्बीह पढ़ रहे थे और दूसरी तरफ़ कर्बला की ख़ाक के ज़र्रे उनकी तस्बीहों और इबादतों को देखकर उनकी तारीफ़ व तस्बीह कर रहे थे।

चाँद की फैली हुई चाँदनी, काएनात की फ़ज़ा का सन्नाटा, फ़ुरात की ख़ामोश मौजें, थमा हुआ पानी,

रुक-रुक के दबे पाँव चलती हुई हवाएं इन इबादत करने वालों की ज़ियारतें कर रहीं थीं। आशूर की रात इसी तरह कटी, आज के निकलते हुए सूरज का रंग ही और था। जर्द चेहरा, थरथराई हुई किरनें, शरमाई हुई निगाहें, जैसे एक सोगवार किसी के ग़म में अज़ादार था, बाल बिखरे हुए चेहरे पर कर्बला की ख़ाक मले हुए, यूँ गिरेबाँ चाक आशूर की सुब्ह हुई। यह सुब्ह उस दिन उस शाम का पैग़ाम लाने वाली है जब दुनिया से इमामत का सूरज डूब जायेगा हरम की शमा ख़ामोश और मदीने का चिराग़ बुझ जायेगा दिन चढ़ते-चढ़ते फौजें आमने सामने हो चुकीं, लश्कर की तरतीब हो चुकी एक मज़लूम और सैय्यद और रसूल[अ०] के फ़रज़न्द को क़त्ल करने को हज़ारों और लाखों ख़ूँखार तैयार और कमर कस चुके लेकिन इस इबरतनाक मौक़े पर भी हुसैन[अ०] और हुसैन[अ०] के साथियों का डटे रहना देखने के क़ाबिल है। किसी माथे पर बल नहीं किसी चेहरे पर ग़म और रंज के आसार नहीं नज़र आते, जैसे मौत उनकी समझी बूझी और जानी पहचानी है जिससे मुलाक़ात का शौक था।

जंग छिड़ी, ख़ून के दरिया उमण्डने शुरु हो गये, हुसैन[अ०] के साथी और रिश्तेदार एक-एक करके रुख़सत होने लगे। बचपने के दोस्त हबीब इब्ने मज़ाहिर गये, ज़ुहैरे क़ैन, मुस्लिम इब्ने औसजा रुख़सत हुए, रिश्तेदारों की बारी आई, अक़ील और जाफ़र की औलाद काम आई, लेकिन मुसीबतों के बढ़ने के साथ हुसैन[अ०] के चेहरे पर सुर्ख़ी बढ़ती जाती है। नूरानियत में इज़ाफ़ा होता जाता है।

अकबर[अ०] मैदान में आये, तलवारें और बरछियाँ खाईं, बाप को जुदाई का दाग़ दिया। अब्बास[अ०] भी रुख़सत हुए दरिया पर बाजू कटे, सर पर भारी गुर्ज़ पड़ा मगर हुसैन[अ०] के हाथ से सब्र व इस्तेक़लाल का दामन न छूटा, आख़िर में हुरमला ने तीर से मासूम शशमाहे अली असग़र[अ०] के गले को भी छेदा और बच्चे का काम हुसैन[अ०] के हाथों पर तमाम कर दिया। इन्सानियत के हाथ पैरों में कपकपाहट आ गई मगर हुसैन[अ०] के न हाथ काँपे और न पैर थरथराये।

काएनात के ज़र्रे-ज़र्रे से नौहे और मातम की सदाएं बुलन्द हुईं मगर हुसैन[अ०] के मज़बूत क़दम न डगमगाये। अब बस एक मरहला रह गया था जो हुसैन[अ०] के वास्ते पहले ही से आसान था, मगर सब्र और बर्दाश्त के जौहर कैसे खुलते, अगर पहले ही जेहाद के मैदान में आकर हुसैन[अ०] अपनी जान दे देते। होगा यही। मगर अभी ज़रा जंगे के मैदान को जमल और सिफ़्फ़ीन का आईना बन जाने दो। हमज़ा[अ०] और जाफ़र[अ०] की भूली हुई बहादुरी की याद एक बार फिर ताज़ा हो जाने दो। अली[अ०] की तलवार के जौहर आख़िरी बार दुनिया के सामने फिर आ जाने दो।

जंग की और बहादुरी की तारीख़ को उलटकर दुनिया की तारीख़ से बहादरों की बहादरी के निशान मिटाकर उस मन्ज़िल पर पहुँचे जिसका इन्तिज़ार कर रहे थे।

आख़िर नेज़ों और तलवारों, तीरों और सिनानों में मज़लूम का ख़ून बंटा, शिम्र मलऊन के कुन्द ख़ंजर ने इन्सानियत के जिस्म और जान के आपसी जोड़ को तोड़ दिया। हुसैन[अ०] शहीद हुए और क़ाफ़ला अपने इरादे से अपनी आख़िरी मन्ज़िल पर पहुँचा। यसरिब से चला हुआ मुसाफ़िर कर्बला की सरज़मीन पर मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँच कर रुका। नेज़े की नोक पर सर बुलन्द हुआ और हुसैन[अ०] ने अपने सर के साथ-साथ इस्लाम को भी बलन्द करके दम लिया।

दुनिया मिट जायेगी मगर हुसैन[अ०] के कारनामे क़ुदरत की याद के साथ हमेशा-हमेशा याद आते रहेंगे।



हुसैन[अ०] की क़ुर्बानी हर फ़िरक़े और क़ौम के लिये रास्ता दिखाने वाली रौशनी है।
(पण्डित जवाहर लाल नेहरू)

हिन्दू धर्म की मुस्तनद और मुक़द्दस किताब भगवत गीता के चार योग हैं:- कर्म योग, ज्ञान योग, राज योग, भक्ति योग, हुसैन[अ०] की ज़ात इन चारो योगों में साफ़ नज़र आती है।
(पण्डित चन्द्रिका प्रसाद)